New Man International Journal of Multidisciplinary Studies
(UGC Approved Journal No. 45886)
ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

33.

गांधी दर्शन की प्रासंगिकता वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक परिपेक्ष्य

डॉ.श्रीमती कल्पना वैश्य
सह.प्राध्या.राजनीति विज्ञान
शा.महाराजा स्वशासी पी.जी. महाविद्यालय–छतरपुर(म.प्र.)

21वीं सदी की नयी पीढ़ी को गांधी जी के दर्शन के राजनीतिक एवं समाजिक मूल्यों का बोध करवाने के उद्देश्य से 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा बाल्मीकि मंदिर से स्वच्छ भारत अभियान का प्रारंभ किया गया।[1]

महात्मा गांधी सच्चे अर्थो में धरती पुत्र थे। उनके हृदय में ग्राम व ग्रामीण का चिंतन कितनी गहराई तक व्याप्त था, यह उनके शब्दों से व्यक्त होता है। ''यदि गांव समाप्त हो गये तो भारत भी समाप्त हो जायेगा। भारत भारत नहीं रहेगा। दुनिया में उसका अपना मिशन ही समाप्त हो जायेगा।''[2] वर्तमान परिपेक्ष्य में भी यह ज्वलंत सत्य सामने है क्योंकि तेजी से बढ़ता शहरीकरण तथा गांवों से होता पलायन एक बड़ी चुनौती बन चुका है। ऐसे में प्रधानमंत्री की ''आदर्श ग्राम योजना'' गांधी जी के स्वप्न को साकार करने की कड़ी सावित हो सकती है। यद्यपि गांधी जी और अम्बेड़कर का समाजिक समरसता का स्वप्न उनके जीवनकाल में पूर्ण नहीं हो सका लेकिन इसे शासन की आदर्शग्राम योजना एवं सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान, निर्मल ग्राम योजना, भारतोदय, योजना, ग्राम उदय योजना, नगर उदय आदि के माध्यम से साकार किया जा सकता है।

गांधी जी ने गांव में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की आवश्यकता पर भी विशेष बल दिया था। उनका विश्वास था कि गांव की समस्याओं एवं जरूरतों का समाधान गांव में ही पूर्ण हो सकता है।

गांधी जी के ग्राम स्वराज पर विचार : उनके अनुसार –

1. ग्राम स्वराज का अर्थ एक ऐसा प्रजातंत्र, जिसमें ग्रामीण अपनी अधिकांश आवश्यकताओं के लिये एक दूसरे से अनिवार्यतः सहयोग करेंगे।
2. आधारभूत शिक्षा सबके लिये आवश्यक होगी।
3. ग्रामीण शासन के संचालन हेतु प्रत्येक वर्ष गांव से ही पांच व्यक्ति पंचायत के लिये निर्वाचित होंगे। जिन्हें निर्धारित योग्यता रखने वाले ग्रामीणजन ही चुनेगें। ऐसी पंचायत को सभी शक्तियाँ एवं अधिकार होंगे।

4.यह पंचायत अहिंसा के आधार पर मानव कल्याण को केन्द्र में रखकर कार्य करेगी।

गांधी जी के अनुसार न सिर्फ भारत बल्कि विश्व की भी ऐसी अर्थव्यवस्था होनी चाहिये, जिसमें किसी को भी अन्न और वस्त्र की तकलीफ न उठानी पड़ें अर्थात प्रत्येक को इतना कार्य अवश्य मिल जाना चाहिये, जिससे वह अपनी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ हो सके। गांधी जी की आत्मा ग्राम स्वराज में बसती थी।

गांधी जी मानते थे कि मात्र स्वतंत्रता प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं है, बल्कि यह भी आवश्यक है कि पुराने सामाजिक ढांचे को तोड़कर एक नया ढांचा तैयार किया जाये और यह कार्य अहिंसक तरीके से ही हो।[3]

स्वच्छता पर विचार :–

गांधीजी स्वच्छता एवं अश्पृश्यता पर स्पष्ट और पूर्णताः केन्द्रित थे। क्योंकि वे जब सावरमती एवं वर्धा आश्रम में रहते थे तो प्रत्येक व्यक्ति को शौचालय साफ करना अनिवार्य था फिर उन आगन्तुकों में कितनी भी बड़ी हस्ती जैसे– इंदिरा गांधी, नीला क्रैम कुक, या अन्य ही क्यों न हो। गांधी जी ने अनेकों बार स्वयं ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जब उन्होंने स्वयं चाहे भारत या दक्षिण अफ्रीका कहीं पर भी हों, शौचालय तथा आगे बढकर मल साफ किया।''

दक्षिण अफ्रीका से भारत आने पर उन्होंने राजकोट को प्लेग से बचाने हेतु स्वयं अपनी सेवा देने की घोषणा की वहां की स्वच्छता व्यवस्था को सुधारने के लिये। इसी प्रकार जब वे दूसरी बार दक्षिण अफ्रीका से लौटे तब कॉंग्रेस अधिवेशन में शामिल हुये। उस समय कॉंग्रेस कैंप की स्थिति स्वच्छता के सम्बंध में अत्यंत दयनीय थी, क्योंकि कुछ प्रतिनिधि तो अपने कमरे के बाहर के बरामदे में ही मल त्याग देते थे तथा दूसरे लोग कोई आपत्ति भी नहीं करते थे तब ऐसे में गांधी जी ने आगे बढ़ते हुये स्वयं सेवियों से वार्ता की लेकिन उत्तर संतोषजनक न पाते हुये उन्होंने एक झाड़ू लेकर स्वयं गंदगी साफ की तथा बाद में कॉंग्रेस केंपों में स्वच्छता हेतु सफाई कार्य के लिये दलों का गठन प्रारम्भ हुआ। हरिपुर कॉंग्रेस में सफाई कार्य के लिये 2000 शिक्षकों एवं छात्रों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया था, जिसमें समाज के सभी वर्गों को शामिल किया गया था क्योंकि गांधी जी भारत से अश्पृश्यता को पूर्ण रूपेण समाप्त कर देना चाहते थे।

इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान गांधी जी ने जेल में शौचालय साफ करने का अभियान प्रारम्भ किया था। वास्तव में स्वच्छता लाने एवं अश्पृश्यता समाप्त करने की दिशा में गांधी जी के द्वारा जो कार्य प्रारम्भ किये गये थे वर्तमान सरकार के द्वारा उन्हीं कार्यो को आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है। आशा है निश्चित ही आगे आने वाले समय में हम स्वच्छ भारत एवं एक भारत का निर्माण करने में सफल होंगे।

वर्तमान सरकार का उन्नत भारत अभियान भी गांधी के विचारों को साकार करता हुआ प्रतीत होता है क्योंकि इस अभियान की प्राथमिक कड़ी गांव ही है। स्वयं ''गांधी जी देश का विकास गांवों से चाहते थे। उनके अनुसार देश के विकास का पहला सूर्य 'गांव' है। रामराज्य के सम्बंध में गांधी जी ने एक स्थान पर स्वयं लिखा है कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से इस पृथ्वी पर ईश्वर का राज्य कहा जा सकता है। रामराज्य में गांधी जी नैतिक अनुशासन पर आधारित ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहां किसी पर कोई रोक नहीं होगी, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति, आत्मानुशासन से बंधा होगा।''[4] इसी प्रकार भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि ''अगर हमें एक राष्ट्र का निर्माण करना है तो हमें इसकी शुरूआत गांव से करनी होगी।''[5]

वर्तमान सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से जैसे – स्वच्छ भारत, उन्नत भारत, निर्मल ग्राम, आदर्श ग्राम सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान, ग्राम उदय से भारत उदय आदि से निश्चित ही गांधी जी के विचारों को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

केन्द्रीय सरकार की महत्वाकांक्षी योजना ''उन्नत भारत अभियान'' निश्चित ही ग्रामीण उत्थान का राष्ट्रीय मिशन है। इसका उद्देश्य तकनीक के उचित प्रयोग के माध्यम से स्थानीय विकास की चुनौतियों का समाधान करना है तथा ग्रामीण क्षेत्रों को स्थानीय और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार प्रबंधकीय और अनुसंधान को बढावा देना है। इसका उद्देश्य तकनीकी संस्थानों की सहायता से ग्रामीण विकास के रास्ते पर आगे बढ़ना है तथा स्थानीय समस्याओं का व्यवहारिक समाधान खोजना है। जिससे ग्रामों को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाया जा सकेगा। ऐसे ही शासन की विद्यांजली योजना जो 21 जिलों की 2200 सरकारी शैक्षणिक संस्थाओं में लागू की जा चुकी है। यह एक स्वयंसेवी कार्यक्रम है जिसके माध्यम से सरकारी प्राथमिक शालाओं में शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार लाना है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने में निजी क्षेत्र और समाज का सहयोग अपेक्षित है।

पर्यावरण संकट और गांधी जी के विचार – सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक विचारों के साथ साथ गांधी जी ने पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढाने से सम्बन्धित बहुमूल्य विचारों से भी सम्पूर्ण विश्व को लाभान्वित किया है। वर्तमान के वैश्विक उपभोक्तावादी संस्कृति के शहरीकरण और औद्योगीकरण की प्रतिस्पर्धा ने प्राकृतिक संसाधनों के और प्रकृति के अधाधुंध दोहन को प्रोत्साहित किया है। वर्तमान परिपेक्ष्य में गांधी जी का पर्यावरण चिंतन हमारे लिये मार्गदर्शन का कार्य करता है। गांधी जी ने विभिन्न लेखों के माध्यम से ग्राम स्वराज के बुनियादी सिद्धान्तों जैसे – मानवता, शारीरिक श्रम, समानता, संरक्षकता, विकेन्द्रीकरण, स्वदेशी, स्वावलंबन, सहयोग, मृदा परीक्षा, विनिमय एवं कर, ग्रामीण यातायात, ग्राम स्वच्छता, ग्रामोंद्योग, ग्राम सुरक्षा आदि पर विचार प्रकट करते हुये कहीं न कहीं प्रकृति के संरक्षण एवं पर्यावरण सुरक्षा की बात अप्रत्यक्ष रूप से कहीं है। ''गांधी जी उद्योग को मानव जाति के लिये अभिशाप मानते थे।''[6] ''गांधी जी शहरों की वृद्धि को मनुष्य का दुर्भाग्य मानते थे।'' गांधी जी ने यह बात असंख्य बार दोहराई कि भारत अपने कुछ शहरों में नहीं बल्कि गांव में बसा हुआ है।''[7] गांधी जी मानते थे कि हम सब प्राकृतिक रूप से अविभाज्य एक ही पर्यावरण के अंश है।

निष्कर्ष – इस प्रकार कहा जा सकता है कि गांधी जी के विचार न केवल सामाजिक सुधार के क्षेत्र में बल्कि राजनीतिक और पर्यावरणीय सभी क्षेत्रों में आज भी प्रासंगिक बने हुये है। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जॉन, रस्किन की पुस्तक 'अनदू दिस लांस्ट' ने उनके जीवन को परिवर्तित कर दिया जिसका अनुवाद गुजराती में सर्वोदय शीर्षक से किया और कहा जिसका अर्थ है सबका 'उदय' अर्थात् सबका विकास। सर्वोदय ऐसे वर्गहीन, जातिहीन, तथा शोषण मुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वागीण विकास का साधन और अवसर प्राप्त हो। वर्तमान समाजिक और राजनीतिक भौतिक संस्कृति के परिपेक्ष्य में गांधी वादी दर्शन अत्यधिक उपयोगी है तथा भारतीय सरकार उनके दर्शन से प्रेरित होकर अनेक योजनायें संचालित भी कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. w.w.w. जागरण. Com. New Delhi.- city-ncr-through-Gandhi-walk-the-delhi-govt.-told-the-people-about-Gandhi Philosophy-1480/300:html.
2- www.Uday india.in/hidi/ZP=2284(हरिजन पृ.423)
3- Sanitation,indiawaterportal.org/hidi/node/3166
4. ऋतेश कुमार सिंह – ''गांधीवादी विचारधारा एवं राष्ट्रीय आन्दोलन' लेख प्रतियोगिता दर्पण / जनवरी / 2015 पृ.72
5. Unnati.iitd.ac.in/index.Php/in
6. रीना पाठकः 'पर्यावरणीय संकट और गांधीवादी दृष्टिकोण' भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका, वर्ष सप्तम्, अंक प्रथम, जुलाई–दिस.,2015,पृ.270
7. हरिजन :04.04.36 पृ.63

❑❑❑